International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

मेवाती समाज और संस्कृति - एक ऐतिहासिक अध्ययन

शर्मिला यादव

शोध छात्रा, इतिहास विभाग

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

शोध आलेख सार–

संस्कृति को समाज का आईना कहा जाता है। किसी भी देश की सामाजिक और आध्यात्मिक, बौद्धिक विभूति को संस्कृति के नाम से जाना जाता हैं। प्राचीन संस्कृतियों में से एक भारतीय संस्कृति को अनेक उतार - चढावों से गुजरना पडा है। फिर भी आज भारतीय सभ्यता और संस्कृति जीवित रही है। यहा पर ब्रिटिश कूटनीति ने देश का विभाजन कर दिया परन्तु फिर भी हमारे देश में एकता और सांस्कृतिक समग्ररूपता देखने को मिलती हैं। इसी प्रकार पूरे भारतवर्ष में हरियाणा क्षेत्र की उसकी संस्कृति के कारण एक अलग ही पहचान हैं। वैसे भी किसी कौम की संस्कृति उसके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन का आईना होता हैं। संस्कृति में मनुष्य के विचार, रूचि, विश्वास और आदर्श समविष्ट रहते हैं। अगर हम हरियाणा के इतिहास का ध्यान से अध्ययन करे तो यह देखने को मिलता है कि मेवात क्षेत्र में रहने वाले मेवों की संस्कृति, एक सम्पूर्ण संस्कृति हैं। मेवातीयों का रहन - सहन, उनके रीति - रिवाज, सामाजिक जीवन तथा लोक साहित्य का हरियाणा क्षेत्र में अलग ही पहचान हैं। इस शोध लेख में मेवात क्षेत्र में रहने वाले मेवों के समाज व संस्कृति का वर्णन किया जायेगा

मेवात का सांस्कृतिक परिचय

अपनी विशिष्ट संस्कृति, रहन–सहन, रस्मों–रिवाज, बोली के कारण मेवात की आज भी अपनी अलग पहचान तथा अस्तित्व है।[1] भारत के 'इम्पिरियल गजेटियर' के अनुसार "देहली के दक्षिण में स्थित वह भू–भाग जिसमें मथुरा और गुड़गाँव जिलों का कुछ भाग, अलवर जिले का अधिकांश भाग और भरतपुर जिले का थोड़ा सा भाग शामिल है, मेवात कहलाता है।"[2] इस

* शोधार्थी, इतिहास विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।

शोध–पत्र में हमारा प्रयोजन हरियाणा राज्य के मेवात क्षेत्र से है, जिसका गठन 4 अप्रैल 2005 को किया गया है। इस क्षेत्र में मेव जिन्हें मेवाती कहते हैं, हिन्दुओं के साथ रहते है।

इस क्षेत्र में आज भी मेवातियों की बड़ी संख्या आबाद है। कुछ इतिहासकारों का मत है कि इस क्षेत्र में आबाद मेव जाति के नाम पर ही इस क्षेत्र का नाम मेवात पड़ा। मेव जाति एक मिश्रित कबीला है। मेव जाति का सम्बन्ध प्राचीन आर्य जाति मेद से है। इसीलिए इस क्षेत्र का नाम मेद जाति के नाम पर मेदपाल भी रहा है। मध्यकाल में दिल्ली अजमेर के शासक पृथ्वीराज चौहान की पराजय के उपरान्त मेदपाल राजपूतों की बड़ी संख्या धर्म परिवर्तन करके मुसलमान हो गई थी। ये ही जन मेव है। मेव समुदाय का सम्बन्ध मेवात से होने के कारण इन्हें मेवाती भी कहा जाता है।[3]

मेवात एक समग्ररूप संस्कृति

मेवातियों को प्राचीन और मध्यकाल से ही बहादुरी के किस्से सुने जा सकते हैं कि उन्होंने किस प्रकार दिल्ली के सुल्तानों और मुगलों से संघर्ष किया, वे हमेशा से ही अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ते आ रहे है और मेवातियों से किस प्रकार मध्यकालीन शासकों को परेशान रखा और इन पर किसी भी शासक की एक न चली। ये हमेशा से ही सद्भावना से जीते आये है। इसी प्रकार मेवाती संस्कृति भी बहुत ही वरिष्ठ व सम्पूर्ण है। इसी के कारण मेवातियों की अपनी एक अलग पहचान है। यहाँ एक धर्मनिरपेक्ष को समग्ररूप संस्कृति पाई जाती है।

देखा जाए तो किसी भी समाज, देश और कौम की जड़े उसकी संस्कृति के भीतर होती है। संस्कृति का निर्माण वह भावों–विचारों की भूमि पर मिलकर करता है, जहाँ से मनुष्यता का सूरज उगता नजर आता है। जहाँ संकीर्णता और कट्टरता की सारी दीवारें ढह जाती है। बाबर भी मुसलमान था और हसन खाँ मेवाती भी। इस के बावजूद मेवाती और बाबर की संस्कृति में फर्क था। उस समय तक मेवाती की सांस्कृतिक जड़े भारतभूमि में थी।[4]

इस प्रकार हसनखाँ मेवाती ने मजहबी भाई बाबर का साथ न देकर अपने मादरेवतन हिन्दुस्तान के लिए संघर्ष किया। इस प्रकार मेवात हमेशा से सद्भावना का प्रतीक रहा है। इस प्रकार मेव हमेशा से मुस्लिम बादशाहों से टकराते रहे, क्योंकि इन नजर में वे आनमारी थे। ऐसे हिन्दू व मेव मुस्लिम कारनामों की इतिहास में भरमार है।

इस प्रकार मेवात में देखा जाए तो देश की आजादी तक और फिर इसके बाद भी हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों के लोगों में आपस में भाईचारा पाया जाता रहा है। न केवल हरियाणा में

बल्कि मेवात में भी 1857 के समय हिन्दू–मुस्लिम एकता देखने को मिली। ये सभी एक साथ मिलकर अपने देश के लिए लड़ते आये और इन्होंने कभी भी धार्मिक पृथकता को स्वीकार नहीं किया और 1857 के समय मेवों में आपसी सद्भावना देखने को नजर आई और अंग्रेजों का विरोध सभी धर्मों के लोगों ने मिलकर किया।

गुड़गाँव में मेवों ने जाटों तथा अहीरों के साथ मिलकर अपने ही उन खानजादा धर्मभाईयों का विरोध किया जो कि अंग्रेजों के भक्त थे। इसी प्रकार होडल के जाट तथा राजपूतों ने मिलकर वहां के सूरत गोत्रीय अंग्रेज भक्त जाटों का विरोध किया। सेवली के कुछ इसी प्रकार के पठानों को नष्ट करने के लिए मेवों ने हिन्दू क्रांतिकारियों का साथ दिया।[5] इस प्रकार मेव हमेशा अपने देश के लिए मिलजुलकर अपने दुश्मनों के खिलाफ लड़े और आपसी भाईचारे को बनाये रखा।

हमने उपरोक्त अध्ययन किया कि किस प्रकार ये मेव हमेशा से ही अपने देश और संस्कृति को अपनाते आये, उन्होंने कभी भी अपने देशप्रेम और संस्कृति को नहीं त्यागा। ये हमेशा मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़े। मेवों का राजनीतिक इतिहास ही धर्मनिरपेक्षता और समग्ररूपता से नहीं भरा बल्कि अगर हम देखें तो मेवों का सामाजिक जीवन और उनकी संस्कृति हिन्दू–मुस्लिम मिश्रित संस्कृति पाई जाती है। अब हम मेवों की सम्पूर्ण संस्कृति का अध्ययन न करके, केवल उन ही परम्पराओं का अध्ययन इस लेख में आगे करेंगे, जो हिन्दू–मुस्लिम में समग्र रूप से पाई जाती है। क्योंकि मेवों की संस्कृति में आज भी निरन्तरता देखी जा सकती है। वो आज भी अपनी संस्कृति को नहीं भूले, चाहे उन का धर्म परिवर्तित हो गया।

मेवात में आज भी एक धर्मनिरपेक्ष और समग्ररूप संस्कृति पाई जाती है। इनकी संस्कृति धार्मिक एकता एवं सामाजिक सद्भावना का अनूठा उदाहरण है। मेव हिन्दू–मुस्लिम की मिश्रित संस्कृति की पहचान है। यहाँ पर आज भी 'पालबंदी' सिस्टम धर्म की सीमाओं से दूर है। इन दोनों धर्मों में मेवात में आपसी भाईचारा दिखाई देता है। ये दोनों एक–दूसरे के निकट है कि इन की संस्कृति से पता चलता है कि इनकी संस्कृति न तो सम्पूर्ण रूप से हिन्दू और न ही मुस्लिम। यह तो दोनों का समग्र रूप है। इन दोनों समुदायों ने सदियों से यहां पर एकजूटता को कायम रखा। इस दौरान न तो इस्लाम आड़े आया और न ही हिन्दुओं का हिन्दू धर्म। इन दोनों समुदायों ने जिंदगी की सच्चाई को एक साथ सहन किया है कहा भी गया है कि रोटी, कपड़ा, मकान का कोई मजहब नहीं होता, जिस रोटी से हिन्दू अपनी भूख मिटाते हैं, उसी से मेव।

इसी क्रम में एक छोटे मेवात जनपद ने अपने तरीके से एक लघु संस्कृति का निर्माण उस छोटी नदी की तरह किया है जो अन्ततः किसी बड़ी नदी में जाकर मिलती है और इस मिलन प्रक्रिया में महासागर का हिस्सा हो जाती है। भारतीय संस्कृति यदि महासागर है तो मेवात की लघु संस्कृति उसकी एक छोटी नदी है।[6] इस प्रकार मेवात की मिली–जुली संस्कृति के बारे में हम जानेंगे।

मेवों की समग्र परम्पराएँ : पाल और गौत्र

अब हम मेवों के सामाजिक जीवन और परम्पराएँ में पाई जाने वाली सांस्कृतिक समग्ररूपता का वर्णन करना चाहते हैं। मेवों ने हिन्दुओं की संस्कृति के साथ–साथ अपनी मुस्लिम संस्कृति को कभी नहीं भूले। आज जो सम्बन्ध हिन्दू पालों के बीच है, वही सम्बन्ध मेव पालों में भी पाया जाता है।

मेव कौम 12 पालों तथा 52 गौत्रों में बंटी हुई है, जिसे 'बारह–बावन' कहा जाता है। मेवों में एक तेरहवीं पास भी है, जिसे पल्लाकड़ा कहा जाता है। यहाँ दिलचस्प बात यह जान लेना होगी कि मेवों के 25 गौत्र ऐसे हैं जो न केवल जाटों, राजपूतों तथा चमारों से मिलते हैं, बल्कि इन नामों के कबीले प्राचीन ईरानी तथा मध्य एशियाई व चीनी इतिहास में भी पाये जाते हैं।[7]

आज भी मेव पालों के सदस्य केवल मेव ही नहीं है, बल्कि इस क्षेत्र में रहने वाले वे हिन्दू भी जो किसी विशेष पाल की नीतियों को मानने की शपथ ले लेते हैं, इसमें शामिल कर लिये जाते हैं और उस पाल के विभिन्न कार्यकलापों में उनका बराबर का हस्तक्षेप होता है।[8]

यही कारण है कि मुसलमान मेवों की पालों में हिन्दू मीणे भी शामिल है। मेवों की तरह ही मीणों में भी डेमरोत, छिरकलौत, दूलौत, देंहगल तथा सींगल पाले है। जो उनके एक ही वंश तथा पाल सिस्टम की सुदृढ़ता का स्पष्ट प्रमाण है। जाटों और मेवों के तो पच्चीस गौत्र एक ही जैसे है, जो उनके अटूट जातीय सम्बन्ध का प्रमाण है। जाटों तथा मेवों ने हमेशा ही धर्म के आडम्बरों एवं अंधविश्वासों का विरोध किया है। तभी तो कहा जाता है–

"जाट का क्या हिन्दू और मेव का क्या मुसलमान।"[9]

मेवों की पालें भी उपपालों में बंटी हुई है, जिन्हें 'थांबा' कहा जाता है। ये उपपालें उन गांवों के नाम से मशहूर है, जहाँ से इनका 'निकाल' (जन्म) हुआ है। कुछ उपपालें अपने संस्थापक चौधरी के नाम से भी मशहूर है। मेवों के गौत्रों एवं पालों में एक बड़ा अंतर यह है कि पालों की सीमाएं निश्चित की जा सकती है मगर गौत्रों की नहीं। पालों के क्षेत्र में जो दूसरे

गौत्रों के लोग रहते हैं, उन्हें 'निपालिया' कहा जाता है। मगर ये लोग सम्बन्धित पाल के साथ अपना भाईचारा कायम कर लेते हैं। पहले समय में ऐसा करना इसलिए भी जरूरी था, ताकि अल्पसंख्यक गौत्र के लोग अपने मान एवं सम्मान की सुरक्षा कर सकें।[10]

इसी तरह से मेवातियों में बिरादरी व्यवस्था भारतीय समाज की तरह ही महत्वपूर्ण है। बाहरी आक्रमणों के कारण भी आज यह बिरादरी व्यवस्था विद्यमान है। यह परम्परा मेवातियों में सदियों से एकता और भाईचारा बनाये रखती आ रही है।

इस व्यवस्था में मेवात और उसके आस–पास बसने वाली सभी हिन्दू एवं मुसलमान भाईयों की तरह मिलकर रहते हैं। मेवातियों की यह सामाजिक व्यवस्था इतनी सुदृढ़ एवं सफल थी कि 1933 ई॰ तक मेवात में कोई साम्प्रदायिक झगड़ा नहीं हुआ था।[11] मेवों का आपसी भाईचारे के लिए पाले इसका स्पष्ट उदाहरण है।

मेवों की मौखिक परम्पराओं में मेवों की 13 पालों का सम्बन्ध हिन्दू देवताओं व नायकों से माना जाता है। पालों की वंशावली बताती है कि पाँच शक्तिशाली जादव, मेव पाल (दुलति, छिरकलोत, डेमरोत, पन्दलोत, नाई नासर) कृष्णजी के वंशज है। चार तौमर मेव पाल अर्जुन को अपना पूज्य मानती है। छिगल व सिंगल मेव पालों का सम्बन्ध रघुवंशावली से माना जाता है। मेवों की कलेशा पाल का सम्बन्ध राठौर राजपूत वंश से बताया जाता है। 13वाँ पल्लाखड़ा पाल निबाणों का है।[12] इसी प्रकार गौतो तथा पालों में आपसी गठबंधन भी होता है, जिसे भाईचारा कहा जाता है। सम्बन्धित गौत व पाल एकदूसरे की बात का सम्मान करते है तथा समय पड़ने पर एकदूसरे की मदद भी करते है।[13]

हमें मेवों की पालबंदी के कारण आपस में भाईचारा नजर आया परन्तु 'कौट बहीन' की लड़ाई, जिसमें सामुदायिकता उभर कर सामने आईं। इस का वर्णन इस प्रकार है–

1937 में कोट और बहीन[16] की लड़ाई, जिसमें एक पाल के जाट और मेव, मिलकर दूसरी पालों के जाटों और मेवों से लड़े। लड़ाई तीन दिन तक चली। मौके पर पुलिस पहुँची और लाशों को अपने कब्जे में लेने का प्रयास किया, मगर असफल रही। फिर दोनों ओर के जिम्मेदार लोगों को गिरफ्तार कर थाना ले जाया गया। मगर इससे पहले कि पुलिस कोई कार्यवाही करे, दोनों पक्षों ने आपस में फैसला कर लिया।[14] मेवात के लोगों में पाये जाने वाले भाईचारे और इंसानियत ने उन्हें बहुत प्रभावित किया और अध्ययन[15] करने पर उन्होंने पाया कि मेवात और उसके आसपास रहने वाले सभी लोग खड़ी बोली बोलते हैं, उनकी संस्कृति एक है और एक सी ही ऐतिहासिक परम्परायें है, उनकी संस्कृति एक है और एक सी ही ऐतिहासिक परम्परायें है। इस पूरे समाज में

सद्भावना कूट–कूट कर भरी हुई है। यहाँ राजनैतिक गठबंधन की प्राचीन परम्परा 'पालबंदी' है जो हिन्दुओं और मुसलमानों में समान रूप से पाई जाती है।[16]

इस प्रकार मेवों और जाटों की सामाजिक सदभावना सफल हुई और साम्प्रदायिक ताकतों की हार हुई क्योंकि मेवाती समाज विभिन्न धर्मों और जातियों व सम्प्रदायों में बंटा होते हुए भी आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारणों से आज भी धार्मिक व सामाजिक एकता पाई जाती है।

परन्तु 1947 के समय मेवात में साम्प्रदायिकता देखने में आई, विभाजन की सबसे अधिक मार मेवातियों को ही सहनी पड़ी। यहाँ पर हिन्दू और मुस्लिम लड़ने लगे परन्तु इस साम्प्रदायिकता की अग्नि को राष्ट्रीय नेताओं ने गांधीजी और विनोबा भावे इत्यादि ने बनाये रखा।

हमें यहां के लोगों पर गर्व है कि देश के दूसरे हिस्सों में जब–जब साम्प्रदायिकता की घटनाएँ हुई, तब–तब यहां के लोगों ने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 'सर्वधर्म समभाव' की परम्परा को कायम रखा।[17] मेवात का समाज धरती को ही अपना धर्म मानकर इससे जुड़ा रहता है इसलिए आजादी के वक्त आया इन पर बुरा वक्त भी इन्हें अपनी धरती से हटा नहीं सका। व्यापारी और भिखारी दोनों धरती को प्यार नहीं करते। मेवाती तो धरती को प्यार करता है इसलिए हिन्दुस्तान छोड़कर नहीं गया। यह अपने ऊपर आए संकट से बचना जानता है।[18] इस प्रकार मेवाती हमेशा से ही अपनी देश से ही प्रेम करते रहे और साम्प्रदायिकता के समय भी यहाँ पर हिन्दू–मुस्लिम सद्भावना कायम रही। चाहे कुछ समय के लिए कुछ हलचल जरूर हुई।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मेवों में गौतों व पालों में आपसी गठबंधन और भाईचारा पाया जाता है। गौत व पाल एक दूसरे की बात मानते हैं और कठिन समय में एकदूसरे का साथ देते थे।

यह तो निर्विवाद ही है कि मेव लोग यहां के मूल निवासी है और इस भू–भाग पर बसने वाली दूसरी जातियों अर्थात् जाट, अहीर, राजपूत और गुज्जरों से सदैव इनके भाईचारे के सम्बन्ध रहे है। लगता है जैसे मेव यहां की उपरोक्त जमींदार जातियों से ही है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि जब भी यहां के जाटों, अहीरों और राजपूतों की आवश्यकता हुई उन्होंने अपने मेव भाईयों से भाई होने का वास्ता देकर सहायता मांगी और मेव सदैव अपने भाईयों के लिए जूझते रहे।[19] मेवों की वैसे तो मुस्लिम धर्म में आस्था है, परन्तु मेवों ने हिन्दू–संस्कृति के कितने ही अच्छे तत्वों और रीति–रिवाजों, परम्पराओं का अपना रखा है।

मेवों की धर्मनिरपेक्ष और समग्ररूप संस्कृति–

मेव लोग धर्म की दृष्टि से इस्लाम के अनुयायी है और अपने गैर–इस्लाम भाईयों के साथ मिलजूलकर रहते चले आ रहे है। भारत के इतिहास में हिन्दू–मुस्लिम जातीय एकता का 'मेवात' एक अनूठा उदाहरण है।[20]

मेवों में मुस्लिम परम्पराओं के साथ–साथ गैर इस्लामिक परम्पराओं को भी अपनाया जाता है। मेवों के सामाजिक जीवन व संस्कृति में हिन्दू संस्कारों की एक धारा प्रवाहित हो रही है। इनमें हिन्दुओं की तरह की गौत्र को छोड़कर विवाह और नाम, विवाह संस्कार, त्यौहार, पर्दा, चाक, कुआँ पूजा, भैरों बाबा और हनुमान जी की मान्यता, बेह माता इत्यादि संस्कारों को अपनाया जाता है। इन का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है–

मेवों में हिन्दू गौत्र और नाम

अधिकांश मेव केवल नाम से ही मुस्लिम लगते हैं, वे अभी भी 50 प्रतिशत तक पुराने हिन्दू रीति–रिवाजों को अपनाते है।[21] मुसलमान होने के पश्चात् भी मेवों के कन्हैया, अर्जत, मोती, समेसिंह, उमेद, बने सिंह, मेदा, शेरू, रूडा, घसीड़ा, चकमल, रणमल, फते फकीरा, चावसिंह, मंगल, सरूपा, रणबाज, दीनू, दलपत, धनपत, धम्माली, ऊदल, सुमेर, लटूर, शमशेर, मुहरू, गुटारी, सूका, दान सिंह, कुम्भा और भीख आदि हिन्दू नाम इस बात का प्रमाण है कि मेवों ने कभी अपनी संस्कृति को नहीं त्यागा तथा धर्म के नाम पर भेदभाव या लड़ाई–झगड़ा उनकी कल्पना से बाहर की बात रही।[22]

इसी के साथ यह माना जाता है कि पहले इनके नाम में 'राम' भी होता था और ये नाम के साथ सिंह भी लगाते थे। परन्तु अब धीरे–धीरे 'सिंह' नाम को 'खान' में बदल रहे हैं और दिन में पांच बार 'नमाज' भी पढ़ने लगे है।

मेवात में शादी–विवाहों के अवसरों पर भी इनका लोक जीवन इस सांस्कृतिक धरोहर में सरोकार हो जाता है। मेव जाति तेरह पाल व बावन गोत्रों में बंटी हुई है और इनके साथ रहने वाली जातियां भी स्वयं को इन्हीं गौत्रों को मानती है। जो मीणों, जाटों और गुर्जरों के अतिरिक्त अन्य बहुत सी जातियों के गौत्र पाल भी मेवों के जैसे है। यहां यह बात उल्लेखनीय है कि मेवों की शादियाँ हिन्दुओं के समान ही गौत्रों को बचाकर होती है। जबकि मुसलमानों में ऐसा नहीं है। मेवाती में यह कहावत है कि "गौती सों भाई, बाकी की असनाई।"[23] यदि किसी गौत्र में लड़का ब्याह दिया जाता है तो उस गौत्र में लड़की नहीं दी जाती थी। अगर भूल से ऐसा हो भी जाता

है तो बिरादरी में हंगामा खड़ा हो जाता था और अक्सर ऐसे रिश्ते तोड़ दिये जाते थे। मेवों में किसी भी स्थिति में अपने गौत्र, गांव व चाची, ताई आदि नजदीक के रिश्तेदारी में शादी ब्याह नहीं किया जाता था। तबलीग जमाआत के प्रभाव में आकर 1960 ई॰ में उटावड, रोपड़का और हरियाणा के नूंह तहसील के घासेड़ा के मौलवियों ने चाची, ताई के सम्बन्ध में शादियाँ सम्पन्न करवाई। परिणामस्वरूप उन्हें समुदाय के गुस्से का शिकार होना पड़ा। मेवों ने शादी का बहिष्कार किया और मौलवियों पर आक्रमण किया। उनमें से एक कत्ल कर दिया और उसके शरीर को चीर दिया गया। उसके बाद से उनकी गौत्र प्रणाली में कोई दखलअंदाजी नहीं हुई। सुभान खाँ एक मेव मौलवी ने निराशा से इन बात को स्वीकार किया कि गौत्र प्रणाली जारी है। जब इसे रोका जाता है तो फूट पड़ता है। उसी के शब्दों में, "गौत्रा वाली गाड़ी तो चल रही है, रोकते हैं तो बवंडर होता है।"[24] मेवों में कुछ गौत्र अन्तर्जातीय विवाह भी करते थे, जैसे–पठान, गुर्जर, व ब्राह्मण स्त्रियों के साथ शादी कर लेते थे और उनसे पैदा हुए बच्चों को मेव समुदाय में शासित कर लिया जाता था।[25] मेवों में अपने गौत्र की हर लड़की को पुत्री का दर्जा दिया जाता है और विशेष बात यह है कि मेवों व खानजादों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध न के बराबर है।

मेवों में विवाह में हिन्दू–परम्पराएँ–

मेवों में विवाह कम उम्र में ही कर दिये जाते हैं और गौत्र व्यवस्था का क्या महत्त्व है, यह हम पहले ही बता चुके है। मेवों में विवाह के समय पारिवारिक सम्बन्धों को बहुत महत्व दिया जाता है। इसके समय विवादों का निपटारा किया जाता है। मेवों में तलाक के रिवाज में मुस्लिम मान्यताएँ होती है और लड़की को सम्पत्ति नहीं दी जाती। परन्तु विवाह में 'निकाह' को छोड़ कर सभी रस्में हिन्दुओं की अपनाई जाती है। यहां पर हम हिन्दुओं की जो रस्में मेवों में अपनाई जाती है। उन का संक्षिप्त वर्णन ही देगें जैसे – सबसे पहले विवाह के लिए 'छोरा देखना' और फिर सगाई कर दी जाती है।

विवाह की तिथि प्रायः एक या डेढ़ महीने पहले ही तय हो जाती है, जिसकी चिट्ठी वधु पक्ष की ओर से नाई या मीरासी लेकर जाते है। वर पक्ष के लोग अपनी बिरादरी की दावत करते है तथा पूरी बिरादरी के सामने चिट्ठी पढ़कर सुनाई जाती है। इसे 'ब्याह आना' कहते है। इसके कुछ दिन बाद 'तेल' या 'लगन' आता है, जो इस सिलसिले की दूसरी कड़ी होती है। इसके पश्चात् दोनों पक्ष बाकायदा विवाह की तैयारी शुरू कर देते है।[26] विवाह दुल्हा/दुल्हन के 'बनवारे' निकाले जाते है और 'उबटन' लगाते है और दुल्हा पक्ष विवाह से एक दिन पूरी बिरादरी

को दावत पर भी बुलाया जाता है। इसी के साथ–साथ वर तथा वधू पक्ष की औरते 'चाक' या 'कुआँ' पूजन करती है। शादी के दिन 'भात' भरते है। इस प्रकार सभी रस्में हिन्दुओं जैसी है।

सलामी रस्म के हिसाब से शादी के मौके पर देवर अपनी भाभी को सलाम करता है और भाभी अपने दुल्हे बने देवर को आरती उतार कर टीका लगा, दुआ देकर विदा करती है।[27] इसके अलावा भी शेष रस्में भी हिन्दू संस्कृति के अनुसार ही होती है। मेवों की सभी विवाह की हिन्दू रस्मों का वर्णन नहीं कर पायेंगे। मेवों में 'निकाह' ही मुस्लिम परम्परा से होता है, जिसका वर्णन इस प्रकार है–

जिस स्थान पर बारात का स्वागत किया जाता है, वहाँ वधु पक्ष के लोग दुल्हा को दान के रूप में कुछ रुपये देते है, जिसे 'खेत' का दान कहा जाता है। इसके पश्चात् 'गाजे–बाजे' के साथ बारात वधु के गांव में प्रवेश करती है। जिसे 'निकाह' के पश्चात् गॉव की सार्वजनिक चौपाल या किसी 'बैठक' पर ठहराया जाता है।[28]

तीन दिन तक वधु पक्ष बारात तथा 'भारकसो' के बैलों को तथा बिरादरी के लोगों को खाना खिलाती है। पहला दिन चढ़ाई का दिन, दूसरा दिन, बारात का दिन तथा तीसरा विदाई का दिन कहलाता है। मगर अब बारात तीन दिन नहीं ठहरती।[29] इस प्रकार उपरोक्त हमने मेंवों में विवाह का वर्णन किया। हिन्दू संस्कृति में विवाह जैसे होते हैं, वैसे ही मेवों में होते हैं। अंतर है तो सात फेरो की जगह 'निकाह' का।

मेवों के त्यौहार और उनकी कुछ हिन्दू रस्में

इसी प्रकार मेवों द्वारा हिन्दुओं के साथ मिलकर होली, दीवाली, दशहरा, तीज, नवमी और छठ आदि त्यौहार बनाना, उनके धर्मनिरपेक्ष चरित्र का जीवन्त प्रमाण है। यद्यपि उपरोक्त रीति–रिवाजों में से आज अधिकतर को मेवों ने त्याग दिया तथापि उनके धर्मनिरपेक्ष चरित्र में कोई बदलाव नहीं आया है।[30] इसी तरह मेव शादी के लिए पीली चिठ्ठी ब्राह्मण पुजारियों से लिखवाते है और अमावस्या के दिन खेत में बैल काम नहीं करते और न ही मजदूर काम पर जाते है।

ये लोग भेरू व हनुमान जी को पानी का देवता मानते थे और इसलिए कुआँ बनाते समय दोनों का चबूतरा बनाया जाता था।[31] ये लोग बेहः को भाग्यरेखा का निर्माण करने वाली देवी के रूप में पूजते थे।[32] इसी प्रकार सैय्यद पर दीया जलाना व कपड़ा चढ़ाना, दरूद लगवाना, ख्वाजा

साहिब अथवा मदार साहिब की छड़ी उठाना तथा मोहर्रम बनाने का विशेष अन्दाज, स्पष्ट रूप से मेवों के ऊपर हिन्दू संस्कृति का प्रभाव नजर आता है।[33]

मेवों का पहनावा व हिन्दू संस्कृति

पुराने समय में मेव मर्द कुर्ता–धोती, फैंटा (पगड़ी) कमरी व सदरी पहनते थे, जिनका स्थान अब कमीज–तहमद तथा बुशर्ट–तहमद ने ले लिया है। पढ़े–लिखे युवक अब पैंट–बुशर्ट या कुर्ता–पाजामा पहनने लगे है।[34] मेवात की मेव स्त्रियाँ पहले घाघरा ही पहना करती थी। उनके घाघरे नीचे और अत्यधिक कढ़े हुए होते थे परन्तु अब वे चूड़ीदार पाजामा पहनती है। इधर विस्थापितों के संसर्ग से सलवार का प्रचार भी बढ़ रहा है। लडकियाँ प्रायः सलवार पहनने लगी है। कुछ युवतियों को भी हल्की होने के कारण सलवार से मोह–सा होता जा रहा है। परन्तु प्रौढ़ाएं व वृद्धाएँ अपनी घाघरी से ही प्रसन्न हो घाघरी से हल्का व पेटीकोट से कुछ भारी एक नया लहंगा भी चल पड़ा है।[35]

मेवों के वस्त्र रंगीन होते हैं और राजस्थानियों और इसी के साथ यहां का ज्यादातर पहनावा हिन्दू लोगों जैसा ही है। साथ में ही स्त्रियाँ नाक नहीं बिंदवादी और नाक में कोई जेवर ना पहनना उनकी पहचान बनी हुई है। मुसलमान होने के बावजूद मेवों में पर्दाप्रथा नहीं के बराबर है। इसका एक कारण उनका प्राचीन परम्पराओं से मजबूती के साथ चिपका रहना हो सकता है। मगर मौलाना वहीद्दुदीन के शब्दों में, "मेवनियों का पहनावा, हमारी पर्दानशीं औरतों के पहनावे से कहीं ज्यादा अच्छा है।"[36] पर्दे के स्थान पर मेव औरतें अपने बड़े पुरुषों, परपुरुषों तथा अजनबियों से 'घुंघट' निकालती है। मेवों के ग्राम्य जीवन में चौपाल का बड़ा महत्त्व होता है। बिरादरी की पंचायतें इन्हीं सार्वजनिक चौपालों, जिन्हें 'थड़ी' कहा जाता है, पर होती है। इन चौपालों पर औरतों का चढ़ना मना होता है। कुछ समय पहले तो मेव स्त्रियाँ इन चौपालों के पास से गुजरते हुए भी घूंघट निकालती थी, मगर यह परम्परा भी अब दम तोड़ चुकी है।[37]

अंत में हम कह सकते हैं कि वैसे अब तबलीग आंदोलन के फलस्वरूप आई, इस्लामिक जागृति के पश्चात् उपरोक्त में से अनेक रीति–रिवाज जैसे सेहरा बांधना, चाक व कुआँ पूजना, तीन दिन बारात ठहराना तथा एक सीमा तक नाचना–गाना आदि छोड़ दिए गए है, मगर अभी भी मेव अपने इन पुराने रीति–रिवाजों पर मजबूती से कायम है। आज भी उनमें प्रचलित गौत बचाकर शादी करना, दुल्हे द्वारा 'सलाम की रस्म' चाक व कुआँ पूजना, बारौटी की रस्म, भैरों बाबा की मान्यता आदि इस्लामी नहीं बल्कि हिन्दू रस्में है। मगर वे रस्में ही उनके धर्मनिरपेक्ष चरित्र का प्रमाण है।[38]

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि मेवात के अधिकांश मेव मुसलमान यहीं के रहने वाले थे। मध्यकाल में मेवों ने अपना धर्म बदल लिया परन्तु इन्होंने कभी भी अपने हिन्दू रीति–रिवाजों को नहीं छोड़ा। उनकी परम्पराओं में निरन्तरता चली आ रही है। चाहे वे मुस्लिम बन गये हो। उन्होंने अपने धर्म को तो परिवर्तित कर लिया परन्तु अपनी संस्कृति को नहीं त्यागा।

यद्यपि हमने उपरोक्त जो वर्णन किया है, उनमें सभी रस्में इस्लामिक नहीं है। मेवात का मुस्लिम समाज आज भी हिन्दू परम्पराओं का दृढ़ता से पालन करते आ रहे है। इन्होंने कभी अपनी उदारता की संस्कृति को नहीं छोड़ा, इसलिए हम कह सकते हैं कि मेवातियों की संस्कृति में आपसी समग्ररूपता और धर्मनिरपेक्षता पाई जाती है। मेवाती हमेशा से ही अपने धरती और संस्कृति से जुड़े हुए है। इसलिए ही तो कहा जाता है कि मेव समाज रीति–रिवाजों द्वारा शासित है। यह इस्लामिक रिवाजों से बंधा हुआ नहीं है। इस प्रकार मेवात में सद्भाव संस्कृति देखने को मिलती है।

पाद–टिप्पणी

1. यादव, कृपालचंद्र, 1966, *मेवात शब्द की उत्पत्ति,* हरियाणा रिसर्च जर्नल, पृ॰ 77
2. सिंह, नमित, अन्य ,2008 ,1857 और जनप्रतिरोध ,नवचेतना प्रकान, दिल्ली, पृ॰ 264
3. चिराग–ए–मेवात, जून 2006, (मेवाती संस्कृति की प्रगतिशील पत्रिका), वर्ष–6, विशेषांक 3, पृ॰ 5
4. यादव, के॰सी॰, 2003, *हरियाणा : इतिहास एवं संस्कृति,* मनोहर पब्लिशर्ज एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृ॰ 115
5. चिराग–ए–मेवात, पूर्वोक्त, पृ॰ 49
6. अहमद 'मेव' सिद्दिक, 1999, *मेवाती संस्कृति,* दोहा तालीम समिति, दोहा (गुड़गाँव), पृ॰ 25
7. वही, पृ॰ 18
8. वही, पृ॰ 18
9. वही, पृ॰ 26
10. अहमद 'मेव' सिद्दिक, 2011, *महान् स्वतन्त्रता सेनानी– चौधरी अब्दुल हई,* चौधरी अब्दुल हई ट्रस्ट, (गुड़गाँव), पृ॰ 40
11. शैल, मायाराम; 1997, *रेस्टिंग रिजिम्ज,* ऑक्सफोर्ड प्रैस, नई दिल्ली, पृ॰ 255–256
12. अहमद 'मेव' सिद्दिक, पूर्वोक्त, पृ॰ 26
13. कोट बहिन की लड़ाई जाटों की रावत पाल व मेवों की छिरकलोत पाल के बीच में हुई।
14. अहमद 'मेव' सिद्दिक, *महान् स्वतन्त्रता सेनानी– चौधरी अब्दुल हई,* पूर्वोक्त, पृ॰ 10

15. यह अध्ययन अं॰ कंवर मुहम्मद अशरफ ने किया।
16. वही, पृ॰ 11
17. हुड्डा, भूपेन्द्र सिंह, 2008, *विकास की उड़ान अभी बाकी है*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 141
18. सिंह, राजेन्द्र, 2012, *मेवात का जोहड़*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 86
19. प्रभाकर, देवीशंकर, 1967, *मेवात का सांस्कृतिक परिचय*, सप्तसिंधु जर्नल, वॉ॰ 14, पृ॰ 1
20. गुलाटी, जी॰एम॰, 2013 *फॉकलोर मेमोरी हिस्ट्री*, देव पब्लिशर डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली,, पृ॰ 136
21. गुडगाँव डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, 1983, पृ॰ 104
22. अहमद 'मेव' सिद्दिक, पूर्वोक्त, पृ॰ 21
23. चिराग–ए–मेवात, पूर्वोक्त, पृ॰ 66
24. शैल मायाराम, पूर्वोक्त, पृ॰ 262–63
25. वही, पृ॰ 47
26. अहमद 'मेव' सिद्दिक, पूर्वोक्त, पृ॰ 31–32
27. चिराग–ए–मेवात, पूर्वोक्त, पृ॰ 49
28. अहमद 'मेव' सिद्दिक, पूर्वोक्त, पृ॰ 34
29. वही, पृ॰ 34
30. वही, पृ॰ 21
31. शैल मायाराम, पूर्वोक्त, पृ॰ 42
32. वही, पृ॰ 44
33. अहमद 'मेव' सिद्दिक, पूर्वोक्त, पृ॰ 21
34. वही, पृ॰ 29
35. शारदा, साधुराम, 1978, *हरियाणा– एक सांस्कृतिक अध्ययन*, भाषा विभाग, चण्डीगढ़, पृ॰ 103
36. अहमद 'मेव' सिद्दिक, पूर्वोक्त, पृ॰ 38
37. वही, पृ॰ 38
38. वही, पृ॰ 37